मधुवन ओम् शान्ति अंक 253 अगस्त 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-07-13)

परमपवित्र परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रह सर्व की मनोकामनायें पूर्ण करने वाले साक्षात बाप समान निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन/ जन्माष्टमी के पावन पर्व की सबको इनएडवांस बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां स्वीकार हो।

बाद समाचार - यह जुलाई मास हमारी मीठी दीदी मनमोहिनी की स्मृतियों का विशेष मास है। दीदी हमारी बहुत स्नेही सखी थी। उनका जैसा नाम था गोपी, ऐसे ही सदा एक बाबा के प्यार में लवलीन, एकव्रता, एकनामी और एकानामी का अवतार हमारी दीदी थी। उनके दिल में सदा एक बाबा ही बसता और सबका बुद्धियोग एक बाबा से ही जुड़ाती, दृष्टि में इतनी शक्ति थी जो सम्मुख आने वाली आत्माओं को सेकण्ड में नज़र से निहाल कर वैकुण्ठ का साक्षात्कार करा देती। स्नेह और शक्ति की प्रतिमूर्ति दीदी ने ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन किया और कराया। उनके जीवन में कभी आलस्य, अलबेलेपन का नामनिशान नहीं देखा। पढ़ाई में इतनी रेग्युलर और पंचुअल रही जो उनके हाथों में सदा डायरी पेन रहता। बाबा की मुरलियों से नोट्स लेना, उसी पर रूहरिहान करना दीदी की बहुत अच्छी हॉबी थी। दीदी को अमृतवेले का बहुत महत्व था, वह रोज़ अमृतवेले स्वयं योग कराती। तो दीदी के इस स्मृति दिवस पर जरूर सभी उनके आदर्शों पर चलते हुए बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का दृढ़ संकल्प लेंगे।

फिर अगस्त मास तो सेवाओं का भी विशेष मास है, रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के त्योहार भारत में तो विशेष मनाते और खूब सेवायें होती हैं। साथ-साथ हमारी मीठी दादी प्रकाशमणी का भी यह अव्यक्ति मास है। दादी की पालना तो बहुत से भाई बहिनों ने ली है। दादी के निश्छल प्रेम और बड़ी दिल ने विश्व में सेवाओं की धूम मचाई। निमित्त और निर्माण, स्वमान और सम्मान का सदा सन्तुलन रख, सत्यता और पवित्रता की देवी बन सबको रूहानी स्नेह की पालना दी और पूरे संगठन को एकमत, शक्तिशाली बनाया। दादी के इस स्मृति दिवस को सभी विश्व बन्धुत्व दिवस के रूप में मनाते हैं। यह हमारे पूर्वज जिनके चेहरों को देखने से ही दिव्यता, पवित्रता और रूहानियत की अथॉरिटी का अनुभव होता है। हमारी सभी पूर्वज दादियां और दादायें अव्यक्त रूप में हम सबके साथ हैं, सभी के दिल में सदा बापदादा को प्रत्यक्ष करने का उमंग रहा है। तो उनके रहे हुए कार्यो को अब पूरा करना ही है।

बाकी हमारा मीठा बाबा तो समय प्रति समय मीठी शिक्षाओ से सबका श्रृगार करते रहते हैं। आज ही बाबा बोले बच्चे, समय प्रमाण अब शुभ भावनाओं से सम्पन्न बन साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाते हुए, अपनी मन्सा शक्तियों द्वारा रूहों का आह्वान कर उनकी सेवा करो। विशेष शान्त स्वरूप स्थिति में रह अशान्त आत्माओं को शान्ति कुण्ड का अनुभव कराओ। अब अपनी कमजोरियों के बजाए भाग्य के गुण गाओ। प्रश्नों से पार सदा प्रसन्नचित रहो।

बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें बापदादा की इन सभी आशाओं को पूर्ण करने के लिए दिल में उमंग आ रहा है ना! अब तो समय भी यही सूचना दे रहा है कि दुःखियों पर रहम करो। सम्पन्न और सम्पूर्ण बन समय को समीप लाओ तो मुक्तिधाम का गेट खुले। बाकी आप सब अपने-अपने स्थानों पर भी योग भट्ठियां कर रहे होंगे। यहाँ भी बहुत अच्छी भट्ठियां चल रही हैं।

अच्छा - सबको याद.....

ईश्वरीय सेवा में,
वी. के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

समय प्रमाण अब परखने की शक्ति अपनाओ

1) ज्ञान-योग के साथ परखने की ज्योतिष विद्या भी जाननी है। कोई भी व्यक्ति सामने आए तो आप लोगों को तो एक सेकेण्ड में उनके तीनों कालों को परख लेना चाहिए। एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति, दृष्टि और भविष्य में कहाँ तक यह अपनी प्रालब्ध बना सकते हैं। यह जानने की प्रैक्टिस चाहिए। यह परखने की शक्ति अभी और भरनी चाहिए।

2) आगे चलकर बहुत परीक्षायें आयेंगी, उन परीक्षाओं में पास वही हो सकेगा जिसको पूरी परख होगी। अगर परख नहीं सकते हो कि यह किस प्रकार का विघ्न है! माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है, इससे रिजल्ट क्या है? यह परख कम होने के कारण परीक्षाओं में फेल हो जाते हैं। अगर परख अच्छी होगी तो पास हो सकते हैं।

3) विघ्नों का सामना करने के लिये पहले चाहिए परखने की शक्ति, फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति। जब निर्णय करेंगे यह माया है वा यथार्थ है? फायदा है या नुकसान? अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है? जब निर्णय करेंगे तो निर्णय के बाद ही सहनशक्ति को धारण कर सकेंगे। पहले परखना और निर्णय करना है, जिसकी निर्णयशक्ति तेज होती है वह कब हार नहीं खा सकता। हार से बचने के लिये अपनी निर्णयशक्ति और परखने की शक्ति को बढ़ाना है।

4) अब समय ही ऐसा आ रहा है जोकि परखने की शक्ति की आपको अति आवश्यकता है। सर्विस में सफलता पाने का मुख्य साधन ही यह है। जितनी परखने की शक्ति तीव्र हो जायेगी, उतनी सफलता भी मिलती जायेगी। परख पूरी ना होने कारण जो उसको चाहिए, जिस रूप से उनकी तकदीर जग सकती है वो रूप उनको नहीं मिलता है इसलिए सर्विस में सफलता कम मिलती है।

5) भविष्य में आने वाली बातों को परखने की और निर्णय करने की शक्ति चाहिये। निर्णय के बाद फिर निवारण की शक्ति चाहिए तभी सामना कर सकेंगे और सामना करने के बाद यज्ञ की प्रत्यक्षता में सफलता मिल सकेगी।

6) परखने की शक्ति बढ़ाने के लिए दिल की सफाई चाहिए। साथ-साथ संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने की पॉवर और मोड़ने की पॉवर चाहिए। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति होगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गवायेंगे। इनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

7) जब दुनिया में किसी कार्य अर्थ जाते हो और आसुरी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखना पड़ता है, तो परखने की प्रैक्टिस होने से बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। अगर परखने की शक्ति नहीं तो विजयी नहीं बन सकते। यह परखने की प्रैक्टिस छोटी बात नहीं समझना, इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को भी परखने की प्रैक्टिस चाहिए।

8) आत्मिक स्थिति के साथ-साथ यथार्थ रूप से वही परख सकता है जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं चलते होंगे। जिनकी बुद्धि एक की ही याद में, एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में होगी, वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे तो उनकी बुद्धि में अपने व्यर्थ संकल्पों की मिक्सचरिटी होगी, इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं सकेंगे।

9) परखने की शक्ति अगर कम है तो उनकी स्पष्ट निशानी यही दिखाई देगी जो उनका हर बात में क्यों, क्या, कैसे.. क्वेश्चन मार्क बहुत होगा। ड्रामा का फुलस्टॉप देना उनके लिए बड़ा मुश्किल होगा इसलिए स्वयं ही क्यों, क्या कैसे की उलझन में होगा। दूसरी बात वह कभी भी समीप आत्मा नहीं बना सकेगा। सम्बन्ध में लायेंगे लेकिन समीप सम्बन्ध में

नहीं लायेंगे।

10) आगे चलकर ईश्वरीय रूप से माया ऐसे सामने आयेगी जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। परखने की शक्ति सदैव अविनाशी रखना, अगर परखने की शक्ति कम होगी तो ब्राह्मण कुल की जो मर्यादायें हैं उन सर्व मर्यादाओं का स्वरूप नहीं बना सकेंगे क्योंकि स्वयं में शक्ति कम होने के कारण औरों में भी इतनी शक्ति नहीं ला सकते जो सर्व मर्यादाओं को पालन कर सकें।

11) अगर कोई शान्ति का प्यासा है, उसको शान्ति मिल जाये तो क्या होगा? प्राप्ति से अविनाशी पुरुषार्थी बन जायेंगे। तो मन के भाव को परखने से, समझने से परिणाम क्या निकलेगा? सर्विस की सफ़लता थोड़े समय में बहुत दिखाई देगी क्योंकि सफ़लता स्वरूप बन जायेंगे। अभी पुरुषार्थ स्वरूप हो, इस लक्षण के आने से सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

12) एक तो अपनी बुद्धि रूपी नेत्र को क्लीयर और केयरफुल रखना और इनएडवान्स नॉलेजफुल होकर परखने का वरदान लेकर जाना है जिससे कभी भी माया से हार नहीं खायेंगे। जिसकी माया से हार नहीं होती, उनके ऊपर सुनने वाले और देखने वाले बलिहार जाते हैं।

13) कई बार माया के वश मनमत को भी श्रीमत समझने लग पड़ते हैं इसलिए परखने की शक्ति सदैव काम में लगाओ। कहाँ परखने में भी अन्तर होने से अपने आपको नुकसान कर देते इसलिए कहाँ भी अगर स्वयं नहीं परख सकते हो तो जो श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त हैं उन्हों से सहयोग लो। वेरीफाय कराओ कि यह श्रीमत है वा मनमत है फिर प्रैक्टिकल में लाओ।

14) अपनी वृत्ति को भी परखने के लिए यह चेक करो कि वृत्ति का वायुमण्डल पर असर क्या है? वायुमण्डल अगर और दिखाई देता है तो समझना चाहिए अपनी वृत्ति में भी कमज़ोरी है। उस कमजोरी को मिटाना चाहिए।

15) जैसे सोने को परखने के लिये कसौटी को रखा जाता है, इससे मालूम हो जाता है कि सच्चा है वा झूठा है। ऐसे ही स्वयं को परखने, निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिये आपके सामने कौनसी कसौटी है? साकार बाप का हर कर्तव्य और हर चरित्र यही कसौटी है। जो भी कर्म करते हो, जो भी संकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है, व्यर्थ है वा समर्थ है? इस कसौटी पर देखने के बाद जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा।

16) सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ है - अपने आप को, परखना व जानना। पहले बाप को परखेंगे तब जानेंगे या पहचान सकेंगे। और जब पहचानेंगे तब बाप के समीप व समान बन सकेंगे। परखने की शक्ति है नम्बरवन। परखना जिसको कॉमन शब्दों में पहचान कहते हैं। पहले-पहले ज्ञान का आधार ही है बाप को पहचानना अर्थात् परखना कि यह बाप का कर्तव्य चल रहा है। परखने की शक्ति को नॉलेजफुल की स्टेज कहते हैं। इसी स्टेज पर स्थित होकर कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाओ।

शिवबाबा याद है ? 13-2-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"तन-मन-धन, स्वभाव संस्कार से दु :ख महसूस होना, यह भी भोगना है, बॉडी-कॉन्सेस भोक्ता बनाती है, सोल-कॉन्सेस स्थिति असोचता और अभोक्ता बना देती है" (दादी जानकी)

1) सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अर्थात् सेकेण्ड में रियलाइजेशन हो कि पहले कर्मबन्धनी जीवन थी, अब जीवन में रहते सब बन्धनों से मुक्त हो गये तो यह सेकेण्ड में ही होता है। साकार वा अव्यक्त में एक एक के लिये जैसे बाबा ने कहा है वो साकार हुआ है, यह है सत् वचन महाराज। जो ऊंचे महात्मायें होते हैं, उनके वाक्यों को महावाक्य कहते हैं।

भगवान हमारे प्रति बोले, हमारे लिये बोले और हम करें तो यह वन्डरफुल राजयोग हो जायेगा। भगवान बोले और हम करें, यही राजयोग है। इशारा देवे यह करो तो कर लेवें, तब कई बार कई बातों में दिल से बाबा अन्दर से निकलता है। कमाल है बाबा की क्योंकि यह हम सोचें तो नहीं हो सकता है इसलिये डोंट थिंक, फिर है माईन्ड सेट एण्ड री थिंक।

2) तो किसी भी बात के सोच में चले नहीं जाओ। सोचने वाले साक्षी नहीं हो सकते, उनके जीवन में हल्कापन नहीं होगा। असोचता, अभोक्ता बनने से साक्षी हो पार्ट बजाना बहुत अच्छा लगता है। अनावश्यक और अधिक सोचने का अक्ल ही नहीं हो। भगवान का बनने के बाद देखा गया है, हमको सोचने की जरुरत ही नहीं है, यह एक आदत है। करनकरावनहार वो है, करने वाला भी कराने वाला भी। जिस घड़ी हम सोच में हैं, तो वो हमारे से दूर है। जब वो पास है तो उसको देख रहे हैं, वो कैसे करता है, कैसे कराता है, वैसे हमें भी करना सहज हो जायेगा।

3) बाबा ने साइलेंस पॉवर से यहाँ बैठके आपको पैदा किया है। बाबा की साइलेंस पॉवर हमको अन्दर से एकदम पिघला देती है। अभी भी जो संस्कार-स्वभाव के वश है माना बाबा की वो पॉवर नहीं है जो उनके संस्कार में बाबा आ जाये। संस्कारों में आयेगा मन-बुद्धि द्वारा। मन-बुद्धि के द्वारा पहले कर्मबन्धन के संस्कार बने हुए हैं, अभी मनमनाभव, मध्याजीभव से संस्कार में बाप और वर्सा भर गया है। मनमनाभव बाबा, मध्याजीभव वर्सा। भगवान को याद करना माना क्या? भगवान का प्यार याद आता है तो कहेंगे यह योग है। आपको पता होगा बाबा के प्यार में प्रेम के आंसू कभी गिरते नहीं हैं, पोछने नहीं पड़ते हैं। परन्तु कोई दु:ख के आंसू बहाये तो बाबा कहता था विधवा आयी है। कोई का माँ बाप मरेगा तो भी इतना दु:ख नहीं होगा लेकिन सबसे ज्यादा दु:ख होता है विधवा को क्योंकि सारी जीवन फिर कहाँ जायेगी, कौन सम्भालेगा। तो कोई आत्मायें ऐसी होती हैं, ऐसे ख्याल करती हैं मेरा फ्यूचर क्या? इन्सेक्युरिटी महसूस होती है, खालीपन महसूस होता है, अकेलापन महसूस होता है या कोई अपना नहीं लगता है। अरे, सब अपने हैं, कोई पराया नहीं है। मेरा कोई नहीं है, अटैचमेन्ट नॉट एलाउ, किसी का सहारा पकड़के चलना नॉट एलाउ, डिपेन्ड बनना नॉट एलाऊ परन्तु साथ देना, संग में रहना, सहयोगी रहना यह पुण्य का काम है।

4) मुरलियों को साक्षी हो करके देखो तो ऐसे लगता जैसे बाबा पर्सनली बच्चों से बात करता है। कोई को कोई बात का दु:ख महसूस हुआ माना यह भोगना है। थोड़ा भी बॉडी कॉन्सेस है तो विचार कैसे हैं, सोचो कोई विचार नहीं हैं तो फ्री हैं। यह मुक्ति फिर जीवनमुक्ति बाबा ने वर्से में दी है।

5) बाबा कभी प्लेन में नहीं बैठा पर बच्चों को प्लेन बुद्धि बनाके प्लेन में घुमाता है, खूब सेवायें कराता है। तो हमको तो उड़ना सिखाया औरों को उड़ना सिखाने के लिये, इसके लिए बुद्धि प्लेन चाहिए। कोई ख्याल नहीं, मुझे सेवा का भी ख्याल नहीं। हाँ इतना जरुर है जितनी स्थिति बाबा समान होगी उतनी सेवा होती रहेगी वो भी बाबा सेवा करा रहा है, मेरे को क्या करने का है।

6) फिकर की बात नहीं है, पर बाबा समान बनना है, बाबा समान रहना है, बाबा समान सेवा करना है, इसमें फॉलो करने का अक्ल चाहिए अर्थात् अवस्था समानता में आवे। इसमें बाप को बीच में रखो तो समानता आ जायेगी। बाकी थोड़ा भी अन्दर मनमर्जी पर चलने की क्वालिटी होगी तो यह कैच नहीं कर सकेंगे, एक म्यान में दो तलवार नहीं ठहरेंगी। इसको खाली करना होगा, कोई भी बात अन्दर नहीं हो। कईयों ने अभी अपने स्वभाव संस्कार के वश अन्दर अपने आपको सेट कर दिया है, तो वो ज्यादा फटफट नहीं करेंगे, कहेंगे अभी मैंने समझ लिया है, ऐसी स्थिति बनानी है। जिसको बाप समान बनना होगा तो वो एक सेकेण्ड भी सेवा के बिना शान्त में बैठ नहीं सकेगा माना उड़ते रहेंगे, उड़ाते रहेंगे। पंछी अगर एक ही डाली पर बैठा रहे तो वो

क्या काम का? ऐसे पंछी को कोई शिकारी शिकार करके मार देगा। पंछी और परदेशी दोनों किसी के नहीं होते। कोई कहते हैं कि आखिर मेरा बेस कहाँ है? बताओ ना। यह किसके बोल हैं? सारा ग्लोब बाबा ने हाथों में दिया है, ग्लोब पर बैठ जाओ, जहाँ भी हैं वहाँ मजा ही मजा है इसलिये पंछी समान बन चक्र लगाते रहो, उड़ेगा वही जो डाली को पकड़ने की आदत को छोड़ेगा। पहले ख्याल आता था कि मरुँ तो बाबा के मधुबन घर में मरूँ... अभी ख्याल आता है भले लण्डन में हूँ, अमेरिका में हूँ; जहाँ भी हैं, बाबा के हैं इसलिए वो भी कोई ख्याल नहीं आता तो ऐसे कई ख्याल हैं, उन सबसे फ्री हो गये हैं तब तो पंछी हो करके उड़ रहे हैं, उड़ा रहे हैं। अच्छा।

14-2-12

पुण्य के खाते में वृद्धि करनी हैं तो बीती को न याद करो न दूसरों को याद कराओ

(दादी जानकी)

साक्षी हो करके देखते हैं तो बाबा ने कितनी सुन्दर रचना रची है, कितनी सेवायें वृद्धि को पा रही हैं। अभी इतनी अच्छी रचना को देख रचता आपेही याद आता है। जिसकी रचना इतनी सुन्दर वो रचता कैसा होगा! वो हम सब अच्छी तरह से जानते हैं। बाबा को जाना तो सब कुछ जाना। मुख्य बात जब बाबा को जानते हैं, मानते हैं, पहचानते हैं तो तीसरा नेत्र खुल जाने से त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन गये हैं। ज्ञान के इंजेक्शन से अज्ञानता खलास हो जाता है माना बुरा न बोलो, बुरा न देखो, बुरा न सुनो, बुरा न करो, बुरा न सोचो। बाबा कहते फालतू सोचो नहीं। ऐसा प्यारा बाबा हमारे मन को शान्त, बुद्धि को श्रेष्ठ सोच द्वारा योग लगाने के लायक बना दिया। मन मनुष्यों में न जाये, बुद्धि और संगों में न जाये, मनमनाभव, मध्याजीभव। इसके लिये कलियुगी बंधनों को तोड़ना पड़ेगा, नहीं तोड़ेंगे तो वे बाबा का बनने नहीं देंगे क्योंकि अनेक जन्मों के हिसाब-किताब के कड़े कर्म-बंधन बहुत दु:खदाई हैं, अब उसे ज्ञान से तोड़ करके एक बाबा के साथ सम्बन्ध जोड़ना है, एक बाबा के संग रहना है। एक बाबा की याद से कर्मबन्धन टूट जाते हैं। बन्धनमुक्त होने से अन्दर से आवाज निकलता है, दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया। आपने बन्धनमुक्त बना दिया, अब जीवनमुक्ति का वर्सा पा करके बाबा के गुणगान करना है। सिर्फ गुणगान नहीं करना लेकिन गुणवान बनना है। केवल मुख से बाप की महिमा नहीं करो, जो बाप के गुण वो अपने जीवन में लाओ तो तुम स्वयं महिमा योग्य बनेंगे।

अब तक जो हुआ उस बीती को न याद करो, न याद दिलाओ तो यह भी एक पुण्य के खाते में वृद्धि हो जायेगी। अभी अपने आपको देख, ज्ञान के आधार से बाबा से शक्ति लेकर अपने कर्मों की गति को पहचानो और भगवान हमारा बाप है, शिक्षक है, सतगुरू है, सखा भी है। बाप शिक्षक बन पढ़ाता है, सतगुरू बन श्रीमत देता है। बाबा की श्रीमत से अब क्या करना है, कैसे करना है, जैसा सिखाता है वैसा करना है। उसी खींच में अब बाबा के पास आये हैं ना। उसकी आकर्षण से, देह के सम्बन्ध से न्यारा बना दिया। आत्मा न्यारी बनने से परमात्म प्यार की शक्ति से त्यागी और तपस्वी बनती है, तब आत्मा पतित से पावन बनती है। तो भगवान हमको प्यार से अपना बना करके गले की माला बनाता है। बाबा कहते समझ करके अपने जीवन से औरों के जीवन को भी आप समान बनाओ।

3-3-13

"माया के वार से बचना है तो कम्बाइन्ड होकर रहो, अकेले नहीं होना"

- गुल्जार दादी

हम तो एक एक के मस्तक में आपका छिपा हुआ भाग्य देख रहे हैं क्योंकि पाण्डव भवन शब्द बोलने से ही बाबा याद आता है क्योंकि पाण्डव भवन में क्या है! तो कहेंगे बाबा का कमरा बहुत अच्छा है, झोपड़ी बहुत अच्छी है। बाबा रहके गया है यहाँ, कमाल तो यह है। तो हमारा भाग्य क्या है? क्योंकि दो ही शब्द है भगवान और भाग्य। तो भाग्य में आप लोगों को स्थान भी भाग्यशाली मिला है, सब दूर-दूर से आते हैं बाबा का कमरा देखने के लिए और आप तो जैसे बाबा के कमरे मे रहते हैं। जब चाहे तब बाबा के कमरे में जाओ, बाबा से बातें करो और बाबा जवाब भी देता है। कोई भी मन की बात अगर बाबा के आगे रखेंगे तो बाबा जवाब जरुर देता है, ऐसा अनुभव है?

तो बाबा अभी हमसे क्या चाहते हैं? क्योंकि प्यार जिससे होता है वो जो भी चाहता है, वो करने के लिए तैयार हो जाते हैं। तो बाबा कहता क्या है? एक ही बात कहता है, सदा एक एक बच्चे का मुखड़ा जो है, वो हर्षितमुख रहे। बातें तो होती हैं, संगठन है ना, वो तो होंगी क्योंकि सब एक जैसे तो नहीं हैं ना, नम्बरवार तो होते ही हैं लेकिन बातों का प्रभाव शक्ल पर नहीं हो। बाबा की याद का, बाबा के स्थान का भाग्य हमारी शक्ल से दिखाई दें।

हमने देखा कहाँ भी जायेंगे आयेंगे, बाबा का कमरा क्रॉस करते हैं और बाबा का कमरा देख करके आपको सारी बाबा की हिस्ट्री याद आ जाती है। तो इतना भाग्य है आपको, जो आपको पाण्डव भवन में रहने के लिये मिला है, सेवा के लिये मिला है। तो आप अपने भाग्य को स्मृति में रख करके सेवा करते हो? वाह मेरा भाग्य!

यही बाबा चाहता है, जैसे बाबा का चेहरा सदा मुस्कराता हुआ देखा, ऐसे कोई भी बातें भी हो जायें तो भी हमारे हर्षितमुखता में फर्क नहीं दिखाई दे, यह हो सकता है? होता है? इसमें कभी-कभी... फिर भी लक है आपका। तो सभी खुश है! कम्बाइण्ड हो? बाबा को दिल में पक्का बिठाया है! तो पुरुषार्थ में कभी भी अपने को अकेला नहीं समझना। अकेला देख माया वार कर देती है। कम्बाइण्ड रहो तो माया कभी भी वार नहीं करेगी। अगर दिल में सदा बाबा ही है फिर तो आप अकेले हो ही नहीं। जहाँ कम्बाइण्ड है वहाँ कुछ नहीं हो सकता है। तो अपने इस कम्बाइण्ड स्वरूप में सदा स्थित रहो क्योंकि कहाँ रहते हो! पाण्डव भवन में, पाण्डव भवन कहाँ हैं जहाँ बाबा रहता था। तो कितने नशे की बात है! तो कभी कोई आपका अचानक फोटो निकाले तो आपके खुशी के चेहरे को देख ऐसा लगे कि यह बाबा के साथ रहते हैं, पाण्डव भवन के पाण्डव हैं। तो अपने भाग्य को आपेही देखो।

हम भगवान का गायन करते हैं और भगवान हम बच्चों के भाग्य का वर्णन करते हैं, जिसके गुण भगवान गाये वो कितना महान हुआ! तो सदा आपके चेहरे पर खुशी हो। कुछ भी हो पर कोई भी देखें, ऐसे लगे कि यह कम्बाइण्ड हैं, बाबा इन्हों की आँखों में है, चेहरे में दिखाई देता है, ऐसा कहे। बस यही कम्बाइण्ड रूप याद करने से माया भी डरती है। माया आवे भगाओ, इतनी मेहनत की जरुरत ही नहीं, वो कम्बाइण्ड देख करके सामने ही नहीं आयेगी। तो सभी खुशमिजाज़! सदा? क्योंकि हमारी शक्ल से लोग बाबा को देखेंगे इसलिए कभी कोई मूड ऐसा हो, तो बाबा कैसे दिखाई देगा? इसलिए बाबा के साथ रहो, मायाजीत होके बेफिक्र होके चलो क्योंकि हमारा साथी बहुत ऊंचा है। तो खुश रहना है और खुशी बाँटना है लेकिन इसमें बाबा कहते हैं एक अक्षर कभी नहीं सोचना, कहना कौन-सा? कभी-

कभी। इस अक्षर को बाबा को दे दो। सदा खुश और खुशी की कमाल, वो किसी चीज़ में नहीं है, जो खुशी में करामत है ना वो और किसी चीज़ में नहीं है। वो है खुशी जितनी भी आप बाँटो उतनी बढ़ती है। दूसरी, अन्य कोई भी एक चीज़ बांटेंगे तो एक रह जायेगी, लेकिन खुशी जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी तो खुशी की खुराक के लिए गाया हुआ है। अगर खुशी बढ़ानी हो तो बाँटना शुरू कर दो। तो खुश रहना है, खुशी देनी है, खुशमिजाज़ रहकर दिखाना है। बाबा का कभी भी फोटो निकालो तो सदा मुस्कराता हुआ... तो फॉलो फादर करना है ना।

दिनचर्या अनुसार याद में बैठना है, कोई नहीं बैठता तो वो उनकी गलती, बाकी नियमानुसार हमारा बना हुआ है, संगठन में याद में बैठना है। और फिर कर्म करते कर्मयोगी अवस्था में रहना है। तो योगी माना बाबा का साथ है। भोजन के समय भी बाबा के साथ भोजन करो। ऐसे नहीं कि इतनी भूख लगी जो बाबा ही भूल जाये, अकेले तो खाना नहीं है जिससे प्यार होता है उसके बिना नहीं खाया जाता है। तो कायदे ही हमारे ऐसे बने हुए हैं जो याद करने नहीं भी चाहें तो याद दिलाते हैं और रात्रि को चार्ट देखो याद किया? कर्मयोगी बनें? कई कहते हैं वैसे याद रहता है, कर्मयोगी बनने में थोड़ा भूल जाता है लेकिन बाबा कहते हैं नवीनता ही यह है, आप कर्मयोगी बन कर्म करते याद में रहना। तो खुशी कभी नहीं गँवाना, आपकी शक्ल बोले, इतनी खुशी आपके चेहरे पर हो जो आपको कहना नहीं पड़े, आपका चेहरा बोले हम क्या हैं? तो हम आपका फोटो अचानक निकालेंगे क्योंकि बाबा पूछता है ना क्या देखा बच्ची, तो क्या कहूँ? पाण्डव भवन में क्या देखा? मतलब लक अपना भूलो नहीं। शक्ल हमेशा सयानी हो, कोई भी अचानक कभी भी देखें तो कहें वाह! देखना हो तो पाण्डव भवन को देखो। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

सेवा में सफलता तब मिलेगी जब आपस में दिल का प्यार, रिगार्ड और संस्कारों में समीपता हो

1) संस्कार परिवर्तन ही स्व-परिवर्तन है। जब तक स्वयं अपना संस्कार परिवर्तन नहीं करते तब तक हम दूसरों को परिवर्तन करने की सेवा कैसे कर सकते। पहले तो हम स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन करें, फिर दूसरा परिवर्तन जो हम आपस में साथी रहते हैं, या साथी मिलके आपस में सेवा करते हैं, तीसरा परिवर्तन चाहिए - अपने बेहद परिवार के क्लास के भाई-बहनों का अथवा बी. के. संगठन का। तब हमारे परिवर्तन से सेवाओं में भी सफलता मिलेगी।

2) बाबा ने हम सबको एक मंत्र दिया - ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता।'' प्रसन्नचित्त भी रहें, सन्तुष्ट भी रहें। अगर मैं आपसे सन्तुष्ट हूँ तो आप भी मेरे से सन्तुष्ट हो, जब दोनों सन्तुष्ट हों तब ही प्रसन्नता हो। अगर एक भी सन्तुष्ट नहीं, तो उनके प्रसन्नता की दुआयें हमें कैसे मिलेंगी इसलिए हम पर्सनल इस बात को जरूर मानती हूँ, आप भी मानते होंगे। भक्ति मार्ग में सदा ही प्रार्थना करते हमारे पर दया करो, रहम करो ....हम सब बाबा के बच्चे हैं तो हमारी प्रसन्नता का आधार है, हम सर्व एक दूसरे में प्रसन्नचित्त हो, प्रसन्नता की दुआयें हमें एक दूसरे से मिलती रहें। असन्तुष्टता है बद्दुआ, सन्तुष्टता है दुआ।

3) सेवायें भले हम 10 करें परन्तु सेवा के साथ हमारा एक

दूसरे में कहाँ तब प्रसन्नता का सहयोग है क्योंकि आज हम सेवा भी करते तो अकेले हम कुछ भी नहीं कर सकते। जब हम एक दो के साथ मिलकर सेवा करते, तो आपस में संस्कारों की रास मिलाकर सेवा करते हैं? जब तक संस्कारों की रास नहीं मिलती तब तक वो सेवा, सेवा नहीं होती। जैसे डान्स करते तो सबका एक दूसरे के हाथ में हाथ होता। सेवा हम सिर्फ अपने दिल को खुश करने लिए नहीं करते, परन्तु सेवा की रिजल्ट है, हम सबको दिल से साथ दें, साथ लें। तो साथ में फिर अनेक बातें आती। बेहद की सेवा भी कई बहुत दिल से, उमंग से करते, कई फिर उसमें भी कंजूसी करते। फिर आपस में दो मतें हो जाती। अब दो मत वाले प्रसन्नता का अनुभव कैसे करेंगे!

4) सेवा में अगर 8 जने हो, उसमें 4 के एक विचार, दूसरे चार के दूसरे विचार हों। अलग-अलग भिन्न-भिन्न सोच-विचार और प्लैनिंग हो तो क्या वो हमारी सफलता हुई? वो हमारा गुलदस्ता एक शो में आयेगा, नहीं। जैसे अपने शहर की जो क्वालिटी वाली आत्मायें हैं, चाहे जनरल पब्लिक हैं या वी.आई.पीज हैं, जितना उन्हों के दिल में हम सबके प्रति प्यार है, उतना हम जो साथ में सामने रहते हैं, क्लास में आते, सेवा करते उनका आपस में दिल का प्यार, रिगार्ड, समीपता है? एक दूसरे को कहना कि आपका यहाँ कनेक्शन है, आप वहाँ नही जाना, वहाँ कुछ नहीं करना, यह भी जैसे एक सिस्टम बन गई है, एक-दो को इशारा देना, पार्टी बनाना, मतभेद में आना क्या वो गुलदस्ता हुआ?

5) बाबा ने कहा तुम बेहद के सन्यासी हो, तुम्हें किसी से क्या लेना देना। हमें तो यहाँ ही बाबा के सामने, बाप समान बनना है। ये महावाक्य रोज़ बार-बार हमारे कानों में आते। बनना है बाप समान और करना है मेरा-तेरा! क्या एक ही शहर में दो चार दस सेन्टर हैं, सभी का आपस में इतना स्नेह है? धागे में मोतियों की तरह साथ में बहुत-बहुत प्यार, रेस्पेक्ट से रह सकते हैं? तुमने किया बहुत थैक्स। हमने किया बहुत अच्छा! तो इस समय परिवर्तन में ये मेरा और तेरा इसी का त्याग चाहिए। बाबा बेहद का सन्यास कराता, वो करते। परन्तु क्या सेवाओं में मेरे-तेरे का त्याग नहीं कर सकते? अब इसका परिवर्तन कैसे हो? पहले तो इसकी मीटिंग करो।

6) हम सभी ज़ोन वाले अपने-अपने सेन्टर में, सेन्टर साथियों में, अपने सबज़ोन में हम सब एक हैं, एक हैं, एक हैं। पहले आप, पीछे मैं। बस ये परिवर्तन चाहिए। तो हमें आता कि बाबा को कैसे बतायें कि बाबा इस साल में मुझे आपके समान बनना ही है और बाबा हम सब आपस में बहुत-बहुत एक मत रहते हैं और एक सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट ले आपस में हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। लेकिन होता क्या है? एक का हाथ इधर है तो दूसरे का हाथ उधर। अब इसको कैसे परिवर्तन करें? कभी कहाँ-कहाँ हम सुनती हूँ कि यहाँ सेन्टर में सभी आपस में बहुत-बहुत खुश रहते, तो सुनकर दिल खुश हो जाती।

7) कहा जाता एक ने कहा, दूसरे ने माना उनका नाम है ज्ञानी। तो हम सब ज्ञानी बैठे हैं यहाँ कोई भी अज्ञानी नहीं। बाबा कहते ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा मुझे प्यारे हैं। अगर दो मत हैं तो संकल्प चलेगा कि तुमने ऐसे किया, मैं ऐसे करूंगा। अगर ये चिंतन हमारी बुद्धि में चला तो वो व्यर्थ हुआ या श्रेष्ठ हुआ! वो दुआओं की बलिहारी नहीं गायेंगे। मैं भी करके दिखाऊंगी, देखूं तुम क्या करती हो, हमारे ब्राह्मण कुल में ये कौन सी चैलेन्ज है!

8) अगर हमारी थोड़ी अपनी मत है, विचार हैं जो दूसरों को पसन्द नहीं हैं, तो उसको एक सेकेण्ड में हम ड्राप नहीं कर सकते? नहीं, मेरे को तो यह करना है, बाकी तुम्हारी मर्जी। ये कौन सी हमारी बी. के. की भाषा हो गई है! अगर आपस में सबकी राय से सेवा करो तो उसमें कितनी खुशी होती। सभी राय करके करेंगे तो संकल्प भी मिल जायेंगे। तो आपस में हाथ मिलाकर करने से तन-मन-धन सूक्ष्म संकल्प सब साथ हो जायेंगे इसलिए आपस में पहले छोटे-बड़े सब मिलकर राय करो फिर दूसरे दिन वो कार्य करो तो सबकी राय से हो। सब मिलकर भले कोई खर्चा करो परन्तु आपस में रूहरिहान करके करो। अच्छा।